ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नयी दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 13 27 मार्च से 03 अप्रैल, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853113 सम्वत् 2069 फा.ब.-10

शुल्कः- एक प्रति 2 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

आर्यसमाज के महान नेता, युवाओं के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 76वें जन्म दिवस के अवसर पर 15 दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक में भव्य आयोजन

कन्या भ्रूण हत्या एवं नशे पर लगे पूर्ण प्रतिबंध

– स्वामी आर्यवेश

9 व 10 मार्च को ऋषि बोध उत्सव का हुआ भव्य आयोजन

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) में यज्ञशाला का भव्य शिलान्यास

24 फरवरी 2013 से प्रारम्भ हुए बेटी बचाओ चतुर्वेद परायण महायज्ञ में हजारों लोगों ने डली आहूति और लिया संकल्प

ब्रह्ममुनि संन्यास की दीक्षा लेकर बने स्वामी ब्रह्मवेश

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ में यज्ञशाला निर्माण हेतु आर्यसमाज नागौरी गेट, हिसार द्वारा दो लाख की घोषणा

आर्यसमाज के महान नेता, त्यागी, तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के संस्थापक स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 76वें जन्म दिवस के अवसर पर कन्या भ्रूण हत्या, दहेज एवं नशाखोरी के विरुद्ध संकल्प हेतु छठा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ 24 फरवरी 2013 से 10 मार्च 2013 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली जिला रोहतक में आयोजित किया गया। 15 दिन तक लगातार चले इस महायज्ञ में हजारों लोगों ने आहूति डालकर संकल्प लिया। इस महायज्ञ का समापन ऋषि बोध उत्सव के अवसर पर 9 व 10 मार्च को किया गया। 9 व 10 मार्च को आयोजित समापन समारोह में विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

9 मार्च को प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक महायज्ञ में आहूतियां डलवाकर संकल्प दिलवाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, दर्शनों एवं उपनिषद् तथा व्याकरण के आचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी ने उपस्थित जनों से संकल्प करवाया। यज्ञ के उपरान्त वैदिक विद्वान डा. बलवीर आचार्य (महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक) का प्रवचन मुख्य रूप से हुआ। युवा भजनोपदेशक श्री सतीश सत्यम् के गीतों ने भी श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। इसी अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने महात्मा ब्रह्म मुनि को संन्यास की दीक्षा देकर स्वामी ब्रह्मवेश नाम दिया। संन्यास दीक्षा के आचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी रहे।

संन्यास दीक्षा के पश्चात् कार्यक्रम मंच से प्रारम्भ हुआ जिसमें सर्वप्रथम आर्य सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता गुरूकुल धीरणवास के कुलपति वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने की। इस सम्मेलन का संयोजन आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता डा. पवन आर्य, पत्रकार ने किया। इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता श्री अतर सिंह स्नेही 'नलवा', श्री बलबीर शास्त्री, स्वामी राजनाथ योगी, संचालक गऊशाला लेघा (भिवानी), डा. लक्ष्मण दास आर्य (आर्य प्रतिनिधि सभा, म. प्र.), ब्र. रामफल, प्रधान आर्य युवक परिषद (उ.प्र.) आदि रहे तथा श्री जगदीश आर्य एवं श्री रामेन्द्र आर्य के गीत हुए। 11 बजे से प्रारम्भ हुए इस सम्मेलन का समापन 1 बजे हुआ।

ध्वजारोहण करते हुए स्वामी ओमवेश जी के साथ वैद्य इन्द्रदेव जी तथा अन्य

2 से 5 बजे तक शिक्षा एवं संस्कृति रक्षा सम्मेलन का आयोजन, नशा बन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कार्यकारी प्रधान स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता गुरूकुल भैंयापुर लाढौत के मुख्य आचार्य हरिदत्त उपाध्याय जी, प्रसिद्ध विद्वान डा. भूप सिंह (भिवानी) आचार्य सन्तराम (रोहतक) चौ. जयप्रकाश आर्य (सोहटी), प्रि. आजादसिंह (सोनीपत) चौ. सूबे सिंह, पूर्व एस.डी.एम., श्री वेदप्रकाश आर्य, गुरूकुल सिंहपुरा के मन्त्री श्री विश्व बन्धु शास्त्री आहूलाना तथा डा. राम अवतार यादव (डी.एफ.एस.) रहे।

सायंकालीन यज्ञ 5 बजे से 6.30 बजे तक आयोजित किया गया।

संगीत संन्ध्या

ऋषि बोध उत्वस की पूर्व संन्ध्या पर एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम पर कार्यक्रम का आयोजन स्वामी शान्तिवेश (सदस्य-अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विरक्त मण्डल) की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि स्वामी सौम्यानन्द (मथुरा) तथा स्वामी प्रकाशानन्द (बेरी) रहे। मंच संचालन श्री रामेन्द्र आर्य (खरकड़ा) ने किया।

आर्य जगत के शीर्षस्थ भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क व उनकी मण्डली ने महर्षि दयानन्द के गीतों से प्रथम तो इतनी भावुकता पैदा कर दी कि उपस्थित आर्य जन ऋषि को नमन करते हुए अपने आंसुओं को रोक नहीं पाए। फिर उन्होंने ऋषि के जीवन की रोमांचकारी घटनाएं रखीं। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी के जीवन पर भी प्रकाश डाला। श्री जगदीश आर्य, रमाकान्त शास्त्री (यमुनानगर), सतीश सत्यम् आदि के गीत भी सराहनीय रहे। साढ़े दस बजे यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अगले पृष्ठ पर जारी

सम्पादक
प्रो. कैलाशनाथ सिंह

आर्यसमाज के महान नेता, युवाओं के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 76वें जन्म ...

10 मार्च 2013

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति

बेटी बचाओ महायज्ञ की पूर्णाहुति 10 मार्च 2013 को प्रातः 10 बजे हुई। जिसमें हजारों कार्यकर्ताओं ने आहूति डालकर संकल्प लिया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी ने पूर्णाहुति के कार्यक्रम को सफलता के साथ सम्पन्न कराया। हालांकि लोग अधिक होने के कारण पूर्णाहुति अपने निर्धारित समय से 30 मिनट की देरी से हुई। संकल्प लेने वाले कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते ही बनता था।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली (रोहतक) में यज्ञशाला का शिलान्यास

आर्यसमाज की गतिविधियों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली (रोहतक) हरियाणा में स्वामी इन्द्रवेश जी के 76वें जन्मदिवस एवं ऋषि बोध उत्सव के अवसर पर यज्ञशाला का शिलान्यास हरियाणा में आर्यसमाज के गौरव माने जाने वाले हरियाणा के पूर्व मन्त्री एवं आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार के संरक्षक चौ. हरिसिंह सैनी तथा आर्यसमाज नागौरी गेट, हिसार के प्रधान चौ. बदलूराम आर्य द्वारा किया गया। यज्ञशाला शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी ने की। शिलान्यास समारोह में मुख्य रूप से स्वामी ओमवेश (पूर्व मन्त्री उ.प्र.), स्वामी चन्द्रवेश, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, चौ. सूबे सिंह पूर्व एस.डी.एम., श्री बजरंग लाल (कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार), श्री वैद्य इन्द्रदेव, मधुर प्रकाश (दिल्ली), डा. पवन आर्य, सज्जन राठी, स्वामी शान्तिवेश, स्वामी सौम्यानन्द, स्वामी केशवानन्द, मा. प्रदीप, मनोचा खण्डेलवाल आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर चौ. हरिसिंह सैनी जी ने यज्ञशाला निर्माण में पूर्ण सिंह (पूर्व. एस.डी.एम.) आचार्य सन्तराम, धर्मवीर सरपंच, सहदेव बेधड़क, दयानन्द शास्त्री आदि शामिल थे। स्वामी आर्यवेश तथा ग्राम की स्वागत समिति द्वारा सभी वक्ताओं का माल्यार्पण तथा गायत्री मन्त्र का पटका पहनाकर सम्मान भी किया गया।

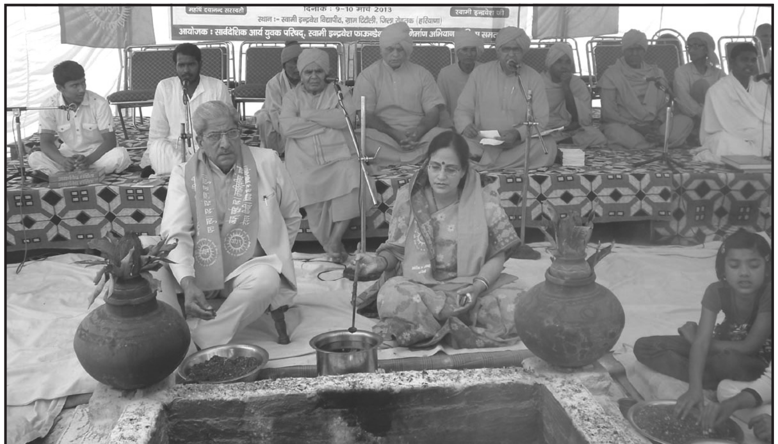

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर उपदेश देते हुए
सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी तथा मंच पर विराजमान संन्यासीगण

आर्य महिला जागृति सम्मेलन

15 दिन तक चला यह कार्यक्रम मुख्य रूप से बहनों को ही समर्पित रहा। इसलिए इसके समापन समारोह का महत्वपूर्ण अंग रहा आर्य महिला जागृति सम्मेलन। इस सम्मेलन की अध्यक्षता महिला अधिकारों के लिए संघर्ष की पर्याय मानी जाने वाली, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की कार्यकारी प्रधान बहन पूनम आर्या ने की। इस सम्मेलन का संयोजन एवं मंच संचालन बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा की महामन्त्री बहन प्रवेश आर्या ने बहुत ही आकर्षक ढंग से किया।

इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. शकुन्तला बेनीवाल, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, श्रीमति कर्मीन्द्र कौर, महिला पहल की जाए।

स्वामी जी ने यह भी कहा कि जल्द ही जिले स्तर पर बेटी बचाओ अभियान तथा नशा मुक्ति अभियान की समितियों का गठन किया जाएगा तथा जागरूकता के इस अभियान को और अधिक सक्रिय तथा संगठित तरीके से आगे बढ़ाया जाएगा।

स्वामी इन्द्रवेश ने सिखाया बुराईयों का विरोध करना

स्वामी ओमवेश, पूर्वमन्त्री, उ.प्र.

उत्तर-प्रदेश सरकार के पूर्व गन्ना मन्त्री, आर्य संन्यासी स्वामी ओमवेश जी ने कहा कि बुराईयों का विरोध करना स्वामी इन्द्रवेश जी ने सिखाया। समाज में व्याप्त विभिन्न बुराईयों के विरूद्ध सर्वप्रथम शंखनाद स्वामी इन्द्रवेश जी ने किया। जिनमें सतीप्रथा, दहेज प्रथा तथा कन्या भ्रूण हत्या का विरोध प्रमुख है। किसानों के लिए इनकी 21 दिन की भूख हड़ताल, शराब बन्दी के लिए पांच हजार कार्यकर्ताओं की पैदल यात्रा आज भी हमारे लिए प्रेरणादायी है। उनका पूरा जीवन इन्हीं संघर्षों में बीता। उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

टिटौली में बनेगा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मीडिया केन्द्र

श्री राजेश लक्ष्मण, सी.ई.ओ. आर्यन बनैवेन्टर होम, दक्षिण अफ्रीका

अब टिटौली से वैदिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार विश्व भर में होगा। यहां जल्द ही अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मीडिया केन्द्र बनाया जाएगा। इसका उप कार्यालय डरबन, दक्षिण अफ्रीका में स्थापित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस केन्द्र में आधुनिक उपकरणों द्वारा वैदिक विचारधारा का प्रचार व प्रसार किया जाएगा, ताकि युवा वर्ग वैदिक विचारधारा से अनभिज्ञ न रहे।

सहयोग की घोषणा की तथा 2 लाख रूपसे आर्यसमाज, नागौरी गेट, हिसार की ओर से देने का आश्वासन भी दिया।

आर्य राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

आर्य राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन ध्वजारोहण के माध्यम से उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मन्त्री स्वामी ओमवेश जी तथा दिल्ली के आर्य नेता वैद्य इन्द्रदेव जी ने किया। परिषद् के व्यायामाचार्य ब्र. सहसरपाल आर्य ने ध्वजारोहण की प्रक्रिया पूरी करवाई। स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के अवसर पर उपस्थित स्वामी ओमवेश, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी शान्तिवेश, चौ. हरिसिंह सैनी, चौ.बदलूराम आर्य, बजरंग लाल गोयल, चौ. सूबेसिंह, वैद्य इन्द्रदेव, स्वामी सौम्यानन्द आदि का माल्यार्पण से स्वागत करवाया। इसके माध्यम से आर्य राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का विधिवत आगाज हो गया।

आर्य राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व मन्त्री हरियाणा सरकार ने की। सम्मेलन में मुख्य वक्ताओं के रूप में जिन महानुभावों ने अपने विचार रखें उनमें मुख्य रूप से स्वामी रामवेश, चौ. बदलूराम आर्य, बजरंग लाल आर्य, विरेन्द्र हुड्डा, विरजानन्द एडवोकेट, डा. प्रकाशवीर, विद्यालंकार, चौ. सूबे सुरक्षा अधिकारी, प्रो. श्रीमति वीणा फौगाट, श्रीमति सरोज कुमारी, श्रीमति दयावती आर्या, श्रीमति सुनीता आर्या, (बेटी बचाओ अभियान), निर्मल आर्या तथा श्रीमति सावित्री देवी, नोएडा श्रीमती यशोदा आर्या ने अपने विचार रखें।

बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्ताओं ने सभी महिला वक्ताओं तथा अतिथियों का मोतियों की माला तथा गायत्री मन्त्र के पट्ट से स्वागत किया।

सम्मेलन की अध्यक्षा एवं इस पूरे कार्यक्रम की मुख्य संयोजक बहन पूनम आर्या ने उपस्थित सैंकड़ों कार्यकर्ताओं को कन्या भ्रूण हत्या, दहेज एवं नशे के विरुद्ध संघर्ष के लिए संकल्प दिलवाया।

आर्यसमाज के महान नेता, त्यागी, तपस्वी संन्यासी, युवाओं के प्रेरणा स्रोत, बेटी बचाओ अभियान के जनक स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 76वें जन्म दिवस के अवसर आयोजित 15 दिवसीय बेटी बचाओ महायज्ञ के दौरान विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा दिए गए उद्बोधन -

भ्रूण हत्या एवं नशे पर लगे प्रतिबन्ध

स्वामी आर्यवेश, संयोजक, सार्वदेशिक सभा दिल्ली।

कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, नारी उत्पीड़न, बलात्कार पर तुरन्त प्रभाव से प्रतिबन्ध लगना चाहिए। नारी उत्पीड़न तथा बलात्कार एवं घरेलू हिंसा जैसी बुराईयों को जन्म देने वाली शराब पर भी यथाशीघ्र पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए। आज जिस युवा को देश चलाना है वह नशे के आगोश में पड़ा मिलता है। इसी के परिणाम स्वरूप युवा दिन-प्रतिदिन अपराध की ओर बढ़ रहा है। कन्याओं को मां के पेट में मरवाना और युवाओं को सही दिशा न मिलना दोनों ही भविष्य के लिए खतरनाक संकेत हैं। हम जितना जल्दी सचेत होंगे इतना ज्यादा देश का हित होगा। हम सरकार से यह मांग करते हैं कि कन्या भ्रूण हत्या व नशे पर प्रतिबन्ध के लिए सकारात्मक रूप से कन्या भ्रूण हत्या के विषय में बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह समस्या देश में आज व्यापक रूप ले चुकी हैं जिस देश को दुनिया में अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के कारण जाना जाता था। उसी से देश में नारी का अपमान शोभा नहीं देता।

धार्मिक भावनओं की कमी है कन्या भ्रूण हत्या का कारण

श्री रामप्रहलाद शर्मा, जर्मनी

जर्मनी से पधारे सामाजिक कार्यकर्ता एवं आर्य युवक परिषद् जर्मनी के प्रधान श्री रामप्रहलाद शर्मा ने कहा कि धार्मिक भावनाओं में कमी के कारण ही कन्या भ्रूण हत्या जैसा अपराध हो रहा है। धार्मिक व्यक्ति कभी जीव हत्या नहीं कर सकता।

उन्होंने कहा कि प्राचीन वैदिक संस्कृति के आधार पर ही भारत विश्व गुरू कहलाया, लेकिन वर्तमान समय में कई तरह की विकृतियां समाज में व्याप्त हैं जो भारत को शर्मसार कर रही हैं। भारत को अपनी पहचान पुनः बनाने के लिए प्रयास करने चाहिए।

वेद सृष्टि का संविधान है

स्वामी चन्द्रवेश, गाजियाबाद

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, दर्शन, उपनिषद एवं व्याकरण के आचार्य, स्वामी चन्द्रवेश जी ने कहा कि जिस तरह किसी भी संस्था, समाज या राष्ट्र को चलाने के लिए एक संविधान की आवश्यकता होती है उसी प्रकार इस सृष्टि को चलाने के लिए भी एक संविधान परमात्मा ने दिया और वह है वेद। वेद ही सृष्टि का संविधान है।

नशा मुक्त हरियाणा बनाने का पुनः संकल्प लें

स्वामी रामवेश

नशा बन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी तथा अन्य नेताओं के संघर्ष से हरियाणा में एक बार पूर्ण शराबबन्दी लागू हुई थी। उसका परिणाम यह निकला कि पूरे हरियाणा में शान्ति एवं सद्भाव का माहौल बढ़ा परन्तु किन्हीं कारणों से यह फिर प्रारम्भ हो गई। अब हरियाणा में पुनः नशा मुक्त हरियाणा बनाने के लिए संकल्प लें तथा इसे नशे से मुक्त करवाएं।

शेष भाग पृष्ठ 6 पर

२३ मार्च बलिदान दिवस पर विशेष

भारत माता के तीन महान सपूत

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव

२३ मार्च १६३१ को शाम के ७.३३ बजे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के निरंकुश शासकों ने भारत माता के उन तीन महान सपूतों सरदार भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दे दी थी जिन्हेंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था और जो जाते जाते फांसी की काल कोठरी से एक नए शोषणमुक्त भारत के नव निर्माण का अमर संदेश हमें दे गए। सरदार भगत सिंह तथा उनके क्रांतिकारी सहयोगियों ने हर प्रकार के सामाजिक उत्पीड़न तथा जोर जुल्म के खिलाफ आजीवन संघर्ष की रणभेरी बजाई। अपने वीरतापूर्ण कारनामों से ब्रिटिश साम्राज्य की नींद हराम कर दी तथा हंसते हुए फांसीके फंदे को चूम लिया। सर्वहारा वर्ग को शोषकों के चंगुल से मुक्त करवा के शोषण विहीन जनवादी आदर्शों की स्थापना के लक्ष्य को लेकर अपने युग की दुर्दांत ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्ति को चुनौती देते हुए आजीवन जूझते रह कर अपने प्राण उत्सर्ग करने वाले इनअमर वीरों का बलिदान दिवस मनाने में हम सबको गर्व अनुभव करना चाहिए।

राजगुरु और सुखदेव उन क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारी साण्डर्स का वध करके लिया।

८ अप्रैल १६२६ की घटना भगत सिंह के साढ़े तेईस वर्ष के अल्प जीवन की महानतम घटना कही जा सकती है जब अंग्रेज सरकार के बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए भगत सिंह ने अपने साथियों के साथ असेम्बली हाल में बम फैकने की योजना बनाई ।बटुकेश्वर दत्त के साथ असेम्बली हाल की दर्शक दीर्घा में दाखिल होकर हाल में बम का बहिष्कार कर रहे थे अतः तीनों को जेल मेंएक संदेशवाहक ने अदालत के इस क्रूर फैसले के बारे में बताया। तीनों क्रांतिकारियों के इस फैसले को अत्यन्त गुप्त रखा गया लेकिन जनता सशंकित हो गई तथा सरकार के विरूद्ध लामबन्द होने लगी। तत्कालीन प्रेस भी इसएक तरफा निर्णय के विरूद्ध था।

राजगुरु

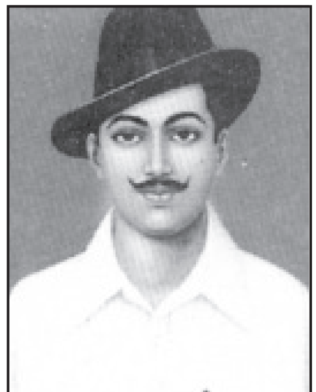

भगत सिंह

सुखदेव

प्रेरणा शहीदों से गर नहीं लेंगे, आज़ादी ढलती सांझ हो जाएगी।
शहीदों की पूजा गर नहीं करेंगे, वीरता हमारी बांझ हो जाएगी।।

अंततः २३ मार्च १६३१ का वह मनहूस दिन भी आ गया जब इन तीनों शूरवीरों को फांसी पर लटकाया जाना था। तीनों ने 'इन्कलाब जिंदाबाद' के नारों के बीच फांसी के फन्दे को चूम कर अपने गलों में डाला मानों रणभूमि में जाने के लिए फूलों की माला पहन रहे हों। भारत माता की स्वाधीनता के लिए तीनों वीरों ने हंसते–हंसते मत्यु का वरण कर लिया।कहा जाता है कि जन–आक्रोश के भय से तीनों वीरों को फांसी निर्धारित समय सेपहले ही दे दी गई तथा इनके शवों को इनके परिजनों को न सौंप कर फिरोजपुर के निकट हुसैनी वाला में मिट्टी का तेल डालकर जला दिया गया। इस स्थान पर अब इन वीरों की स्मति में एक स्मारक का निर्माण किया गया है जहां प्रति वर्ष इनकी स्मति में मेला लगता है जो इन पंक्तियों की सार्थक करता है कि–

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

भारत के इन तीनों महान सपूतों के बलिदान दिवस पर कतज्ञ देशवासी उनके सम्मान में श्रद्धावनत हैं।

– प्रो. लाल मोहर उपाध्याय तथा
शिशु शर्मा 'शांतल'

में हैं। जिनका भगत सिंह से चोली दामन का साथ रहा और तीनों को फांसी भी एक साथ दी गई थी। सन् १६२० में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में भगत सिंह ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था और तभी से अंग्रेज उन्हें अपने रास्ते का कांटा समझने लगे थे। सन् १६२६ में भगत सिंह ने 'नौजवान भारत सभा' का गठन किया। ३० अक्टूबर १६२८ को साईमन कमीशन के विरोध, प्रदर्शन में लाला लाजपत राय के नेतत्व में यह नौजवान भारत सभा सबसे आगे थी। जन समूह के प्रचण्ड विरोध से बौखलाकर अंग्रेज सिपाहियों ने लाला जी पर अंधाधुंध लाठियां बरसाई जिससे वह वीरगति को प्राप्त हुए। लाला लाजपत राय के इस बलिदान का बदला शहीद भगत सिंह तथा उनके साथियों फेंक कर सनसनी फैला दी तथा कायर की भांति भागने के बजाय खुद को शान से पुलिस के हवाले कर दिया। असेम्बली कांड के सिलसिले में भगत सिंह तथा उनके पंद्रह क्रांतिकारी साथियों पर मुकदमा चलाया गया। इनमें राजगुरु तथा सुखदेव भी शामिल थे। मुकदमें के दौरान अपना पक्ष पेश करते हुए इन्होंने कहा कि बम विस्फोट करने का उद्देश्यकिसी को शारीरिक क्षति पहुंचाना नहीं बल्कि अंग्रेज शासकों को यह चेतावनी देना था कि वे भारत से चले जाएं। आखिर लम्बे समय के उपरान्त ब्रिटिश न्याय के नाटक का अंत हुआ और ७ अक्टूबर १६३० को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को मत्युदण्ड सुना दिया गया। चूंकि अंग्रेज सरकार के व्यवहार से क्षुब्ध ये क्रांतिकारी इन दिनों अदालत

दयानन्द का बोध युगान्तकारी घटना थी

दयानन्द ने ''शिव'' के वास्तविक स्वरूप तथा उनके दिव्य ज्ञान स्रोत वेदों के निहितार्थ को सारी दुनिया के समक्ष खोलकर रक्खा। शिवरात्रि के दिन महाजागरण के अनन्तर मूलशंकर (दयानन्द सरस्वती) को ईश्वरीय सत्ता के सम्बन्ध में जो बोध हुआ था वह अपूर्व विलक्षण एवं युगान्तकारी घटना थी। यह बोध परमेश्वर की असीम कृपा का प्रकाश था। उक्त विचार काशी आर्य समाज के सभागार में दयानन्द बोधोत्सव समारोह के अवसर पर रविवार को आर्य व्याख्याता पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतौर मुख्य अतिथि काशी आर्य समाज के सभाकक्ष में व्यक्त किये।

समारोह में सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, मोतीलाल आर्य, डॉ. जयप्रकाश भारती, रमाशंकर आर्य, डॉ. गायत्री आर्या, राजेश राय, डॉ. काशीनाथ, ब्रजभूषण सिंह, रमेश जी आर्य आदि लोगों ने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में वैदिक यज्ञ तथा यजुर्वेद का पारायण समापन हुआ। संचालन एवं धन्यवाद प्रकाश नारायण शास्त्री ने किया।

प्रकाश नारायण शास्त्री

मन्त्री, काशी आर्य समाज, वाराणसी–221001

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रदेश प्रवक्ता सत्यपाल अग्रवाल को मातृ शोक

मरणोपरान्त नेत्रदान कर समाज का मार्गदर्शन कर गईं

हिसार : सजग के प्रदेशाध्यक्ष, सजग जीवन के मुख्य सम्पादक, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, हरियाणा के प्रदेश प्रवक्ता एवं अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े समाजसेवी सत्यपाल अग्रवाल की माता श्रीमती रामबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चिरंजीलाल आर्य का 8 मार्च, 2013 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे 84 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे 4 पुत्र, 2 पुत्री व पौत्र–पौत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। उन्होंने अपनी इच्छानुसार मरणोपरान्त किन्हीं दो व्यक्तियों के लिए नेत्रदान कर समाज में एक अनुकरणीय कार्य कर गई हैं जिससे कि वे समाज में मरणोपरान्त भी जीवित रहेंगी। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति अनुसार हिसार के मुख्य श्मशान घाट में किया गया। 17 मार्च को अन्तिम शोक सभा से पूर्व छोटे पुत्र के निवास पर उनकी आत्मशान्ति के लिए प्रतिदिन हवन किया गया। अन्तिम शोक सभा अग्रसैन भवन, हिसार में हुई। स्वामी आर्यवेश, स्वामी सर्वदानन्द, पूर्व मंत्री एवं विधायक सावित्री जिन्दल, सांसद नवीन जिन्दल, विधायक रामनिवास घोड़ेला, कान्फेड चेयरमैन बजरंगदास गर्ग, पूर्व मंत्री हरिसिंह सैनी, पूर्व सांसद पं. रामजीलाल, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. कमल गुप्ता व उपाध्यक्ष रामचन्द्र गुप्ता, इनेलो शहरी जिलाध्यक्ष हनुमान एरन, इनेलो प्रान्तीय उपाध्यक्ष रामभगत गुप्ता व प्रान्तीय प्रवक्ता राजमल काजल, हजकां जिला अध्यक्ष सूबे सिंह आर्य व हलका प्रधान गुलजार काहलो, कांगेसी नेता रामदयाल गोयल, जनसंघर्ष समिति अध्यक्ष गौतम सरदाना, समाजसेवी सूरजभान सरलिया, जगदीश जिन्दल, रामकुमार रावलवासिया, डॉ. नरेन्द्र गुप्ता, आर्य समाज हिसार अध्यक्ष बदलूराम आर्य व कोषाध्यक्ष बजरंग लाल मुकलान वाले, नई अनाज मण्डी प्रधान पवन गर्ग असरावां, रामलीला कमेटी कटला अध्यक्ष बीरभान बंसल, गुरुकुल धीरणवास अध्यक्ष इन्द्रजीत आर्य, कन्या गुरुकुल डोभी के कुलपति महेन्द्र आर्य, बी.एड. कॉलेज एसोसिएशन हरियाणा के अध्यक्ष एच.के. शर्मा, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रान्तीय अध्यक्ष ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र, बेटी बचाओ अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्य, बहन प्रवेश आर्य, दीपचन्द राजलीवाले, रामेश्वर दास बंका, हिसार प्रैस क्लब के अध्यक्ष देवेन्द्र उप्पल व मनोज हिसारी, देवेन्द्र सैनी, दलबीर आर्य सहित अनेक गणमान्य लोग तथा स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन, भारत विकास परिषद्, हरियाणा अग्रवाल विकास संगठन, सेवा फाउंडेशन, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हिसार, गुरुकुल आर्यनगर, पर्यावरण बचाओ अभियान समिति, संयम, आयुष्मान वेलफेयर सोसायटी, शिवगंगा सेवा समिति, आर्य समाज हिसार, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अग्रवाल वैश्य समाज, न्यू ग्रेन मर्चेन्ट एसोसिएशन, नगर सुधार समिति, जनसंघर्ष समिति, महाराजा अग्रसैन भवन ट्रस्ट सहित अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं ने शोक प्रकट किया व ईश्वर से प्रार्थना की कि शोक संतप्त परिवार को इस दुःख की घड़ी में शक्ति प्रदान करे व दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री राजेन्द्र जिज्ञासु की बचकानी बातें

– आचार्य वेद प्रकाश 'श्रोत्रिय'

7 से 13 मार्च, 2013 के अंक से आगे का भाग.......

श्री स्वामी विद्यानन्द जी को सत्यार्थ प्रकाश भास्कर के लिए पुस्तकें दे देने मात्र से ही आपने बहुत बड़ा तीर मार लिया। ऐसे कामों के लिए ही ईश्वर ने आपकी रचना की है। आप कीजिए। सत्यार्थ प्रकाश पर जब तक ऋषि बुद्धि नहीं होगी, जिज्ञासु जी पुस्तकों से कुछ नहीं लिखा जा सकता, जो लिखा जावेगा वह गलत ही होगा। सिवाय टीप करने के अलावा और होगा ही क्या? इसमें आगे पीछे आने की कौन सी बात हो गई?

मान्य जिज्ञासु जी! श्री विद्यानन्द जी ने भी मीमांसक जी की भूल दुहरा दी। यह आपको तब पता लगा जब डॉ. सुरेन्द्र जी ने आपसे कुछ पूछा अगर नहीं पूछते तो पता नहीं लगता और न ही आप भिन्न–भिन्न संस्करणों का मिलान करते। आश्चर्य यह है कि आपने भिन्न–भिन्न संस्करणों का मिलान भी किया पर आज तक अपने मित्रों की एक भी गलती इन संस्करणों में नहीं दिखाई दी क्योंकि भूल किसी और की ही देखनी है तो इनकी भूल कैसे दिखाई देती?

आपके अपने विद्वान डॉ. सुरेन्द्र जी जिनको आप कहते हैं कि इनसे अर्थात् डॉ. सुरेन्द्र, श्री विरजानन्द तथा श्री धर्मवीर जी से कोई भूल नहीं हुई। यह बात कहकर उस रहस्य को छिपाने का व्यर्थ यत्न कर रहे हैं। आपको युधिष्ठिर मीमांसक जी की भूल दिखाई दे गई विद्यानन्द जी की भूल भी देखने में आ गई। पर महापंडितों की भूल पक्षपात में नजर नहीं आई।

इस पर आप अब देखिए डॉ. सुरेन्द्र जी का

आदरणीय सम्मान्य पाठकजनों! श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु लिखते हैं कि ''आपने तो इतने निष्ठावान् धर्म सेवक ऋषि भक्त की 66 वर्ष की कमाई पर भी पानी फेर दिया। इससे इन उदयपुरियों को क्या मिला? रामपाल सिंह जैसे सतगुरुओं को आर्य समाज पर वार करने के लिए एक हथियार इन्होंने दे दिया।''

मैं जिज्ञासु जी से निवेदन करना चाहता हूँ कि आपकी निष्ठा तथा धर्म की सेवा तथा 66 वर्ष की ऋषि भक्ति इतनी कमजोर है जिस पर कोई भी पानी फेर सकता है? हाँ! यदि आप पक्षपाती होकर मात्र परोपकारिणी सभा तथा उन विद्वानों के प्रति ही अन्धी भक्ति तथा सेवा करना ही ऋषि भक्ति समझते हैं तब तो पानी फिर ही जावेगा इन उदयपुरियों को इस अवोहरिये की ऋषि भक्ति मेटने से तो कुछ नहीं मिलेगा पर सत्य की शक्ति जिज्ञासु में डालने के लिए उदयपुरिए ही क्यों कोई भी निवेदन कर सकता है। आप इस समय ऋषि से सीधे जुड़े नहीं हैं अपितु परोपकारिणी सभा तथा इन विद्वानों के मन्तव्यों के आधार पर ऋषि को देखना चाहते हैं। जिज्ञासु जी! यह भक्ति नहीं ऋषि से विभक्ति का कार्य है।

यह आपकी बड़ी भारी भूल है कि उदयपुरियों ने संत रामपाल सिंह को आर्य समाज पर वार करने के लिए हथियार दिए हैं। संत रामपाल सिंह को हथियार आपके श्री विरजानन्द जी दैवकरणि, डॉ. सुरेन्द्र तथा श्री धर्मवीर जी ने दिए हैं। उदयपुरियों ने इस पर वार करने से यथाशक्ति बचाने की ताकत लगाई है।

आखिरकार आपने स्वीकार ही कर लिया कि दोष

प्रिं. चित्रा नाकरा जी की इज़रायल यात्रा

प्रख्यात् शिक्षाविद्, वैदिक संस्कृति एवं मूल्यों के प्रति अगाध निष्ठावान, शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रपति पदक तथा

अन्य अनेकों पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित वेदव्यास डी. ए. वी. स्कूल की प्रधानाचार्या ''श्रीमती चित्रा नाकरा जी'' इजरायल सरकार के विशेष अनुरोध पर भारत सरकार द्वारा प्रेषित उस विशिष्ट प्रतिनिधि मण्डल के प्रतिनिधि सदस्य रहे जिन्होंने इजराइल की विशेष शैक्षणिक यात्रा की। उनके अनुसार इजराइल के लोगों के हृदय में भारत देश के प्रति अपार सम्मान एवं स्नेह के भाव विद्यमान है। यहूदी समुदाय स्वयं को भारतीय वंश परम्परा में प्रख्यात् चक्रवर्ती सम्राट ''यदु'' का वंशज अनुभव करता है।

अपनी संस्कृति एवं मूल्यों के रक्षण में इज़रायल के लोग सतत् क्रियाशील है, वह जागे हुए योद्धाओं का देश है उनमें राष्ट्रप्रेम तथा देश भक्ति कूट–कूट कर भरी हुई है। वहाँ के लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा पर गर्व का अनुभव करते हैं। 'हिब्रू' वहाँ की राष्ट्रभाषा है जो वैदिक भाषा के अति निकट है। उन लोगों ने अपने बलबूते पर रेगिस्तान के बंजर विहड़ों को शस्य श्यामला भूमि में परिवर्तित कर दिया। वे अपने संयन्त्रों से सागर के खारे पानी को मीठे पानी में बदल कर अपने देश वासियों की प्यास बुझा रहे हैं। हरित ग्रहों (ग्रीन हाऊस) में वे फल–फूल अनाज आदि का अति वैज्ञानिक विधि द्वारा उत्पादन करते

ज्ञान गांभीर्य–अष्टम समुल्लास में महर्षि जी ने नास्तिकों के नौ मत देकर अपनी ओर से उनका खण्डन किया है। उनमें से आठ नास्तिकों के मतों की स्थापना में आठ सूत्र दिखा दिए। नवम चार्वाक मत का कोई सूत्र वहाँ नहीं है। अब जिनको आप ज्ञान समुद्र कहते हैं आपही नहीं आर्य जगत् का कौन ऐसा विद्वान होगा? जो स्वामी बेदानन्द जी तीर्थ के ज्ञान गाम्भीर्य अप्रतिम विद्वत्ता पर मुग्ध न हो, उनसे किसी प्रकार नौंवे चार्वाक मत की स्थापना में यह समझकर कि यहाँ सूत्र नहीं है, एक सूत्र न्याय दर्शन का न स्वभाव सिद्धिरापेक्षिकत्वात्' दे दिया। अब पंडित लोग एक दूसरे के पाण्डित्य तथा खोज वृत्ति वाला व्यक्तित्व समझकर विश्वास कर ही लेते हैं कि इतने बड़े पंडित कह रहे हैं – ऐसा समझकर श्री पं. मीमांसक जी ने उनकी सूत्र स्थापना का अनुकरण कर लिया। इस पर श्री डॉ. सुरेन्द्र ने दोनों का ही उपहास उड़ा लिया और अपना पाण्डित्य प्रदर्शन करते हुए लिखते हैं – वस्तुतः यह समाधान पक्ष का सूत्र है। पूज्य स्वामी वेदानन्द जी से किसी प्रकार यह भूल हो गई और मीमांसक जी ने स्वामी जी के आविष्कारक प्रतिभा पर विश्वास करके ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। पर सुरेन्द्र जी ने इनसे ऊपर उठने की चाह में इस सूत्र को समाधान पक्ष का सूत्र बता डाला। हम मान लेते हैं कि आपके कथनानुसार कोई भूल आपके इन पंडितों से नहीं हुई तो इस पर हमारा निवेदन है कि आप श्री डॉ. सुरेन्द्र तथा सभी विद्वान इस सूत्र को समाधान पक्ष का सूत्र सिद्ध करके दिखायें। हम मान लेंगे कि इनसे कोई भूल नहीं हुई और आपकी दासता भी स्वीकार करेंगे। श्री जिज्ञासु जी भूल मनुष्यों से हो ही जाती है विद्वान चाहे जितना हो। जब तक वह आप्त न हो तब तक गलती होने की संभावना बनी रहती है। क्या आपने उदयपुर द्वारा छपी पुस्तकें देखी हैं जिनकी आप चर्चा कर रहे हैं – क्या भूलें इन्होंने की है? नहीं तो फिर ये आलोचनाएँ व्यर्थ में क्यों की जा रही हैं?

रहित मुद्रण का कार्य सुयोग्य विद्वानों को सौंप ही दिया है। कौन से सुयोग्य विद्वान् डॉ. सुरेन्द्र जी जिनको ऋषि भाषा में 114 वर्ष पुरानी होने के कारण कलंक नजर आते हैं। जिनको ऋषि के ज्ञान पर संदेह है, जिनको ऋषि के सिद्धान्त पर दोष दिखाई देता है तथा श्री विरजानन्द जी जो तीन बार संस्करण निकाल चुके हैं, जो बार–बार तीनों संस्करणों में दावा कर चुके हैं अब एक भी गलती नहीं रही है। हमने एक–एक अक्षर प्रतियों से मिलान कर छाप दिया है। क्या मुद्रण कार्य इन्हीं विद्वानों को सौंपा है? तो क्या मुद्रण दोष रहित सत्यार्थ प्रकाश छप सकेगा? उसमें मुद्रण दोष नहीं है अपितु ऋषि की भाषा का सिद्धान्त में दोष है। जिज्ञासु जी जरा समझ लीजिए। चलो! आपने यह मान तो लिया ही कि अब तक परोपकारी के 39वें संस्करणों पर्यन्त सत्यार्थ प्रकाश अशुद्ध ही छपता रहा है। फिर भी इनकी प्रशंसा में कलम चलती ही रहती है। यह आश्चर्य की बात नहीं तो क्या है? उदयपुरियों के पास इन अजमेरियों तथा इनके समर्थक अवोहरिये को डराने के लिए न तो बंदूक हैं और न ही डराने वा धमकाने की कोई चीज। आपको शर्म नहीं आती कि आपके इन विद्वानों ने प्रत्येक व्यक्ति को फोन–फोन करके व्यक्तिगत रूप से धमकाया है और आरोप उदयपुरियों पर लगा रहे हैं।

अब आगे अगर आपने लिखा तो उसका प्रत्युत्तर भी लिखा जायेगा। जब तक शक्ति रहेगी ऋषि विरूद्ध लिखने वालों को उत्तर देते ही रहेंगे और यदि सामर्थ्य हो तो आमने सामने बैठकर शास्त्रार्थ कर लें जिसके लिए मैंने डॉ. सुरेन्द्र तथा विरजानन्द दैवकरणि को खुली चुनौती कई बार दी है, पर सामने आने की हिम्मत नहीं होती। आपसे भी निवेदन है कि अगर आप अपने शेरों को परोपकारिणी सभा की माँद से बाहर निकालकर ले आवें तो मैं आपको सभी के समक्ष धन्यवाद वा पूजा करने को उत्सुक रहूँगा।

इति!

हैं। वहाँ का बच्चा–बच्चा अपनी पुरातन संस्कृति तथा अपने शहीदों पर देवताओं की तरह गर्व अनुभव करता हुआ उनके पदचिन्हों पर चलकर अपने देश को स्वाभिमान एवं स्वतन्त्रता के दिव्य शिखरों पर सुशोभित करना चाहता है। इज़रायल से हमारे देशवासी अनुशासन, कर्त्तव्यनिष्ठा, देश भक्ति तथा विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहने के लिए अदम्य जिजीविषा की शक्ति और शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रिं. चित्रा नाकरा जी जो आर्य समाज की प्रधाना भी हैं ने वहाँ आयोजित सेमीनार में वेद की पवित्रतम ऋचा "शान्ति मन्त्र" का पाठ तथा उसकी शिक्षाओं पर अपने विशेष विचार रखें जिसे सुनकर सारा प्रतिनिधि मण्डल तथा इज़रायलवासी लोग भाव विभोर हो गये। दस दिन की यात्रा से प्राप्त अनुभव सुख, शान्ति, समृद्धि, अदम्य साहस, शौर्य तथा देशभक्ति की भावनाओं को प्रखरतम बनाती रहेगी।

योग्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज, जे–3/206–207, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–27 के लिए एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। आवेदक शादीशुदा या ब्रह्मचारी हो। पूर्व कार्य अनुभव का विवरण दें। आवेदक को यज्ञ और समस्त वैदिक संस्कार कराने की योग्यता होनी आवश्यक है। वेतन, और रहने का स्थान दिया जायेगा।

सम्पर्क करें : श्री जगदीश आर्य जी, प्रधान, आर्य समाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110027

मो.:– 9213933136

बलिदान दिवस 6 अप्रैल, 1929 पर विशेष

हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान गाथा

– विश्वनाथ

सन् 1923 में मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक उन्नीसवीं सदी का महर्षि प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द का बहुत घिनौना तथा अपमानजनक चित्रण था। उन्हीं दिनों मुसलमानों ने श्रीकृष्ण महाराज के सम्बन्ध में भी एक आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की। पुस्तक का नाम था ''कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी।'' पुस्तक के नाम से ही समझ सकते हैं कि इसमें क्या था। महाशय राजपाल, महर्षि दयानन्द और योगेश्वर कृष्ण का अपमान सहन नहीं कर सकते थे। उन्होंने पुस्तक का उत्तर पुस्तक से देना उचित जाना। इन घिनौनी पुस्तकों का उत्तर देने के लिए 1924 में 'रंगीला रसूल' प्रकाशित की।

यह पुस्तक उर्दू में थी जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी, परन्तु घटनाएँ सभी इतिहास संमत और प्रामाणिक थीं। पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर 'दूध का दूध और पानी का पानी' छपा था। वास्तव में पुस्तक के लेखक पं. चमूपति एम. ए. थे जो आर्य समाज के श्रेष्ठ विद्वान् एवं बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बने थे। वे महाशय राजपाल जी के अभिन्न मित्र थे, उनकी अनेक पुस्तकें राजपाल जी प्रकाशित कर चुके थे। मुसलमानों की ओर से सम्भावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक पर अपना नाम नहीं देना चाहते थे। उन्होंने महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिये कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न बने वे किसी को भी इस पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बतायेंगे। महाशय राजपाल जी ने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की। चमूपति जी पर जरा भी आँच नहीं आने दी।

सन् 1924 में यह मुकदमा शुरू हुआ और सन् 1929 में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पाँच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। यह बात उस जमाने जी के विरूद्ध जानलेवा आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरूप 26 सितम्बर, 1927 को उन पर खुदाबख्श नामक एक मुसलमान ने उनकी दुकान पर जो हस्पताल रोड पर स्थित थी, प्राणघातक आक्रमण किया। आक्रमणकारी एक पहलवान था। उसके हाथ से महाशय राजपाल के जीवन की सुरक्षा की कोई आशा न थी। परन्तु मारने वाले से बचाने वाला महाबली होता है, यह लोकोक्ति इस प्रसंग में सत्य सिद्ध हुई और स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज और स्वामी वेदानन्द जी जो दैवयोग से वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। तथापि महाशय राजपाल बहुत बुरी तरह घायल हुए। घातक के विरूद्ध अभियोग चला और उसे सात वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

स्वामी सत्यानन्द जी पर आक्रमण

महाशय राजपाल अपने घावों के कारण अस्पताल में ही थे कि उसी दुकान पर जिसमें महाशय राजपाल जी को घायल किया गया था, स्वामी सत्यानन्द जी बैठे थे। रविवार, 8 अक्टूबर, 1927 को अब्दुल अजीज नामक एक मुसलमान ने उन्हें महाशय राजपाल समझ कर पीछे से, एक हाथ से चाकू व दूसरे हाथ में उस्तरे से प्राणघातक प्रहार कर दिया। घातक स्वामी जी को घायल करके भागना ही चाहता था कि अद्‌भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए पड़ोसी दुकान वाले महाशय नानकचन्द जी कपूर ने हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गये। उनकी पकड़ से घातक निकलना ही चाहता था कि महाशय नानकचन्द जी के छोटे भाई लाला चूनीलाल जी उस पर लपके और उसे पकड़ने का यत्न किया। उन्हें भी घायल करता हुआ हत्यारा भाग लिया परन्तु चौक अनारकली में उसे दबोच लिया गया। उसे चौदह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड और तदनन्तर तीन वर्ष के लिए

अंतिम यात्रा :

महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सायंकाल हो गया था परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया था कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाए। पुलिस के मुसलमान अधिकारियों ने राज्याधिकारियों के मन में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि यदि शवयात्रा निकली तो शहर में दंगा फसाद हो जाएगा। डिप्टी कमिश्नर ने रातों–रात लाहौर में धारा–144 लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलसे–जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

शवयात्रा कैसी थी –

महाशय जी के बलिदान से आर्य हिन्दू जाति में ऐसा जोश पैदा हुआ जो देखते ही बनता था। शवयात्रा के समय यह जोश देखकर सब में उत्साह का संचार हो रहा था। अनुमान लगाया गया कि पच्चीस हजार लोग शवयात्रा में सम्मिलित होकर शमशान भूमि पहुँचे थे। हिन्दुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों की छतों से हुतात्मा के शव पर पुष्प वर्षा की।

पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि, महाशय नानकचन्द जी नाज ने तब एक कविता लिखी थी जिसकी ये पंक्तियाँ उस समय के जोश का यथार्थ चित्रण करती हैं :–

फख से सर ऊँचे आस्माँ तक हो गए,
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।
फूल बरसाए शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब,
देवताओं ने तेरी जय–जय बुलाई राजपाल।
हो हर एक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब,
जिस तहर तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।
तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजे लानतें,
जब मुजम्मत कर रही है इक खुदाई राजपाल।
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे,

के प्रमुख मुस्लिम दैनिक पत्र जमींदार में प्रकाशित हुई परन्तु महाशय राजपाल जी ने एक ही बात दोहराई कि इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी मेरी ही है, अन्य किसी की नहीं। उन्होंने जो वचन दिया उसे अन्त तक निभाया। पुस्तक बिकती रही परन्तु उसके विरूद्ध कोई शोर न मचा। फिर हुतात्मा गाँधी ने अपनी मुस्लिम परस्त नीति में इस पुस्तक के विरूद्ध एक लम्बी टिप्पणी लिख दी। बस फिर क्या था, एक ओर कट्टरवादी मुसलमानों और मुल्लों ने राजपाल जी के विरूद्ध आन्दोलन छेड़ दिया, दूसरी ओर सरकार ने उसके विरूद्ध सन् 1923 में 153 (अ) धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चलता रहा। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्र रुपये जुर्माने का दण्ड सुनाया गया। इस आदेश के विरूद्ध सैशन में अपील करने पर कारावास के दण्ड में एक वर्ष की कटौती कर दी गई। इसके पश्चात् अभियोग हाईकोर्ट में आ गया। हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश कंवर दिलीप सिंह ने महाशय राजपाल को ससम्मान दोषमुक्त कर दिया।

पहला प्रहार

मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे और उन्होंने राजपाल शान्ति की गारण्टी का दण्ड सुनाया गया।

अंतिम प्रहार :

महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गए हुए थे। वहाँ से 5 अप्रैल को लाहौर लौटे। 6 अप्रैल, 1929 (शनिवार) के दिन दोपहर के समय वे अपनी दुकान में आराम कर रहे थे। उनका एक कर्मचारी पुस्तकों को व्यवस्था से रख रहा था। इल्मदीन नामक एक मुसलमान युवक छुरा छिपाये हुए दुकान के भीतर आया। क्रूर हत्यारे ने आते ही लेटे हुए महाशय राजपाल जी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। वीर राजपाल जी का तत्काल प्राणान्त हो गया। हत्यारा अपनी जान बचाने के लिए बाहर भागा। महाशय जी का कर्मचारी भी शोर मचाता हुआ उसके पीछे दौड़ा। क्रूर हत्यारा भागकर महाशय सीताराम जी के लकड़ीटाल में जा घुसा। सीताराम जी के नवयुवक साहसी सपूत विद्यारत्न जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में पकड़ लिया। इतिहास ने अपने आपको आज पुनः दोहराया। दिल्ली में अब्दुल रशीद ने वयोवृद्ध रुग्ण संन्यासी श्रद्धानन्द पर तीन गोलियाँ चलाकर भागने का प्रयत्न किया तो वीर धर्मपाल विद्यालंकार ने वहीं उसको धर दबोचा था जब तक पुलिस ने आकर उसको बन्दी न बना लिया।

दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

— सौजन्य — राजपाल एण्ड सन्स, 1590, मदरसा रोड, पता—कश्मीरी गेट, दिल्ली—110006

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक, हरियाणा

प्रवेश सूचना : सत्र 2013, प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल, 25 अप्रैल तथा 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोहतक ने अत्यल्प काल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवं व्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय एवं व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक—पृथक रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशालभवन यथाक्रम सुशोभित हैं। गुरुकुल के हरे—भरे पार्क, पार्कों की प्रवेशवीथिकाएँ तथा उनके उपद्वारों पर छाई लताओं के पुष्पगुच्छ पथिकों के मस्तक को चूमते से प्रतीत होते हैं।

गुरुकुल में आपको प्राचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा। संस्था ने शिक्षा के साथ—साथ छात्रों के स्वास्थ्य और चरित्र निर्माण में विशेष ख्याति अर्जित की है। अतएव प्रति वर्ष प्रवेशार्थियों का दबाव बढ़ता जा रहा है। गत वर्ष आपकी संस्था को स्थानाभाव के कारण 568 प्रवेशार्थियों को लौटाना पड़ा। प्रवेश तथा व्यवस्था सम्बन्धी संक्षिप्त जानकारी निम्न है —

विशेषताएँ :—

(1) प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य। (2) 10+2 तक सी. बी. एस. ई. दिल्ली से मान्यता। (3) प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर। (4) संन्ध्या हवन, योग—प्राणायाम, नैतिक शिक्षा और नियमित दिनचर्या। (5) इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स। (6) आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था। (7) कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएँ। (8) 10+1,+2 में आर्ट एण्ड साईंस साइड। (9) हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र : 08607776897, 01262—217550

आर्य समाज मंदिर चोपन का स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

दिनांक 15 से 18 फरवरी, 2013 को वृहद् वैदिक महोत्सव, चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हो गया। महायज्ञ के ब्रह्मा डॉ. व्यास नन्दन शास्त्री ''वैदिक'' मुजफ्फरपुर के निर्देशन में सस्वर वेद पाठ 'कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस)' की आचार्या सुमन जी के साथ आयी ब्रह्माचारिणियाँ मीना, नन्दनी, प्रियंका एवं गुन्जन ने किया। प्रसिद्ध सुमधुर भजनोपदेशक पं. श्यामवीर राघव दिल्ली एवं पं. प्रदीप शास्त्री जी ने भजनों की ऐसी शमाँ बाँधी कि भीषण वर्षा में भी श्रोताओं को पण्डाल में आने को विवश कर दिया। महिला सम्मेलन अन्तर्गत कन्या भ्रूण हत्या एक सामयिक परिचर्चा महिलाओं के बीच काफी लोकप्रिय कार्यक्रम रहा।

दिनांक 17 फरवरी को विशाल शोभायात्रा में पूरे जिले के आर्य प्रतिनिधियों के साथ देशभक्त अमर बलिदानियों की काफी आकर्षण का केन्द्र रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वेचन सिंह उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला प्रधान श्री कपिल देव आर्य—ओबरा, जिला मन्त्री जवाहर लाल मौर्य रावर्ट्सगंज, राजकुमार वर्मा—सुकृत, सुभाष चन्द्र आर्य—शक्तिनगर, रामनारायण गुप्त—खैरटिया, राजनारायण सिंह (प्रा. आर्य विद्या मन्दिर—ओबरा) के साथ चोपन से प्रकाश दास, महेन्द्र सिंह, अजय कुमार सिंह, अजय भाटिया, धीरज चक्रवर्ती, श्रीमती राजवती देवी, श्रीमती रंजना शर्मा, श्रीमती कामिनी देवी एवं अमर दीप आर्य, शाश्वत आर्य का विशेष योगदान रहा।

— शम्भू प्रसाद आर्य
प्रधान, आर्य समाज, चोपन

पृष्ठ 2 का शेष

आर्यसमाज के महान नेता, युवाओं के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी ....

यज्ञशाला का शिलान्यास करते हुए चौ. हरिसिंह सैनी जी, चौ. बदलूराम आर्य जी, स्वामी ओमवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, बहन प्रवेश आर्या जी, बहन पूनम आर्या जी तथा श्री बजरंग लाल गोयल जी

में अधिकांश नैष्ठिक एवं संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी की देन है। स्वामी जी का मानना था कि किसी भी विचार की स्थापना के लिए जीवन दानी कार्यकर्ताओं की अहम् भूमिका होती है।

यज्ञ हमें त्याग व समर्पण सिखाता है

आचार्य सोमदेव, बम्बई

बम्बई से पधारे आचार्य सोमदेव जी ने अपने उदबोधन में कहा कि यज्ञ हमें त्याग सिखाता है। जिस भी व्यक्ति का समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं त्याग होगा वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर रहता है। उसके जीवन से सुगन्धि उसी प्रकार उठने लगती है। जिस प्रकार यज्ञ से उठती है।

आर्यसमाज की एकता के लिए हर सम्भव प्रयास जारी

चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व मन्त्री

आर्यसमाज नागौरी गेट, हिसार के संरक्षक, पूर्व मन्त्री चौ. हरिसिंह सैनी जी ने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी द्वारा आर्यसमाज की एकता के प्रयास सराहनीय हैं। हम आशावादी है जल्द ही हम आर्यसमाज को एक मंच पर देखना चाहते हैं।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ के माध्यम से शुरू होने वाले मीडिया सैन्टर से आर्यसमाज की पहचान दुनियां में बढ़ेगी। इसके लिए हम अग्रिम शुभकामनाएं देते हैं।

महिला दिवस मनाना तभी सार्थक जब महिला उत्पीड़न बन्द हो

पूनम आर्या, अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान

अपने आप को सुधार लो देश अपने आप सुधार जाएगा।

स्वामी सर्वदानन्द,कुलपति गुरूकुल धीरणवास

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी ने कहा कि सुधार अपने से शुरू करो। देश अपने आप सुधर जाएगा। जब व्यक्ति स्वयं त्याग करता है तो उसके त्याग से स्वतः ही आम आदमी प्रेरणा लेने लगता है। जो आप समाज में लागू करवाना चाहे हो उसे पहले अपने जीवन में लागू कर लो। परिवर्तन अपने आप दिखाई देने लग जाएगा।

महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम महिला अधिकारों की वकालत की।

स्वामी श्रद्धानन्द,उपप्रधान, सा.आ.यु.प.

युवा विद्वान संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि महर्षि

कलंक मिट सकता है।

डा. लक्ष्मणदास आर्य (म.प्र.)

अत्यन्तमिलनसार एवं सहनशीलता की प्रतिमूर्तिथे स्थायी इन्द्रवेश

आचार्य हरिदत्त उपाध्याय, आचार्य गुरूकुल लाढौत

बहनों को सर्वप्रथम अपने आप को मजबूत करना पड़ेगा तभी समाज में आप अपना अधिकार ले पाओगी।

दयानन्द शास्त्री (बौद्धिक विद्वान)

आर्य युवक परिषद् ने हमेशा से आम आदमी के अधिकारों की लड़ाई लड़ी है।

चौ.जयप्रकाश आर्य, सोहटी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, सा.आ.यु.प.

आम आदमी को भी इस आन्दोलन में साथ देना होगा तभी विजय निश्चित होगी।

डा. रामअवतार यादव(डी. एफ.एस.ई.)

स्वामी इन्द्रवेश ना होते तो आर्यसमाज मैं नौजवान और मंचों पर संन्यासी देखने को नहीं मिलते।

सहदेव बेधड़क (शीर्षस्थ भजनोपदेशक)

स्वामी इन्द्रवेश जी के 77वें जन्म दिवस तक शुगर की दवाएं नि:शुल्क बांटूगा।

विद्यासागर शास्त्री

महर्षि दयानन्द के उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता।

सतीश सत्यम्

आर्यसमाज की समस्त गतिविधियों को संचालित करने में हम हमेशा स्वामी आर्यवेश

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाना तभी सार्थक है जब महिलाओं के ऊपर होने वाले अत्याचार बन्द हों। वो चाहे घरेलू हिंसा, बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या या छेड़खानी की घटनाएं हो। यदि ये सब महिलाओं के साथ होता है तो महिला दिवस महज एक औपचारिकता है। हम उस दिन के लिए संघर्षरत है जिस दिन महिला अपना अधिकार मांगते हुए नहीं बल्कि अपने अधिकार होने की खुशी मनाती हुई नजर आएगी।

गर्भ में बेटियों को मरवाना परमात्मा के प्रति विद्रोह है

प्रवेश आर्या, संयोजक बेटी बचाओ अभियान

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि मां के पेट में बेटियों को मरवाना परमात्मा के प्रति विद्रोह है। क्योंकि जो लड़की परमात्मा की न्याय व्यवस्था के आधार पर इस दुनिया में आ रही है। उसको मां के पेट में जांच करवाकर मरवाना परमात्मा के आदेश का विरोध है। आज आवश्यकता है बेटियों को बेटों के बराबर अधिकार देने की। जब परमात्मा ने लड़की और लड़के में कोई भेदभाव नहीं किया तो समाज को भी भेदभाव का अधिकार नहीं है।

स्वामी इन्द्रवेश जी का पूरा जीवन समाज को समर्पित रहा।

स्वामी प्रणवानन्द, संचालक गुरूकुल गौतम नगर

स्वामी इन्द्रवेश जी का पूरा जीवन समाज को समर्पित रहा। उन्होंने जहां समाज की जरूरतों की आवाज उठाई। वहीं आर्यसमाज को एक नई पहचान दी। मृतप्रायः आर्यसमाज को पुनः स्थापित करने का काम स्वामी इन्द्रवेश जी ने किया। आज मैं उनको श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने आर्यसमाज को सबसे अधिक जीवनदानी दिए।

बिरजानंद एडवोकेट, महामन्त्री, सा.आ.यु.प.

स्वामी इन्द्रवेश जी के कार्यक्षेत्र में उतरने के बाद उन्होंने सबसे पहला काम किया, आर्यसमाज के लिए जीवन तैयार करने का। उन्होंने आर्यसमाज में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की। आज आर्यसमाज दयानन्द ने सबसे अधिक वकालत महिलाओं केअधिकारों की थी। वेद के आधार पर उन्होंने सर्वप्रथम बताया कि नर और नारी दोनों बराबर हैं। दोनों को पढ़ने का बराबर अधिकार है। वर्तमान में चलाया जा रहा बेटी बचाओ अभियान भी महर्षि दयानन्द के उसी मिशन का एक हिस्सा है। जिसे वर्तमान में हमारी दो विदुषी बहनें पूनम आर्या एवं प्रवेश आर्या चला रही हैं।

नौजवानों को नशे से दूर रखने के लिए आन्दोलन तेज हो

अतरसिंह क्रान्तिकारी

अपना पूरा जीवन नशाखोरी के विरुद्ध समर्पित करने वाले श्री अतर सिंह क्रान्तिकारी ने कहा कि आज देश का युवा नशे के चंगुल में फंस रहा है। उसे नशे से बचाने के लिए जागरूकता आन्दोलन को तेज करने की आवश्यकता है।

जिस व्यक्ति का जीवन यज्ञमय होता है उसके जीवन से और लोग प्रेरणा लेने लगते हैं।

डा. बलबीर आचार्य,प्रसिद्ध वैदिक विद्वान

बुराईयों के खिलाफ लड़ने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएं

महन्त राजनाथ योगी (लेंघा)

वर्तमान समय में आर्यसमाज की विचारधारा और ज्यादा प्रासंगिक हैं

डा. भूपसिंह (प्रसिद्ध वैदिक विद्वान)

सत्यार्थ प्रकाश से जीवन में आमूल चूल परिवर्तन आता है

डॉ.प्रकाशवीर विद्यालंकार

देश का भार नौजवानों के कन्धों पर है इसलिए नौजवानों को सही दिशा देने की जरूरत है।

आचार्यसन्तराम (संगठन मन्त्री, सा.आ.यु.प.)

सबको बेटी बचाओ अभियान में बढ़चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए तभी कन्या भ्रूण हत्या जैसा जी केसाथ खड़े हैं।

चौ. बदलू राम आर्य

बहनों तुम भूल मत जाना अहसान दयानन्द के

बजरंग लाल गोयल

युवा शक्ति ही देश का नक्शा बदलती है।

धर्मवीर सरपंच,अध्यक्ष लोकशक्ति मंच

आर्य समाज द्वारा चलाया जा रहा बेटी बचाओ अभियान महिलाओं के अधिकार दिलाने की एक सार्थक पहल है। हम इसमें आपके साथ हैं।

श्रीमतिकर्मीन्द्र कौर(महिलासुरक्षा अधिकारी,रोहतक)

अपने आप को सक्षम और स्वाभिमानी बनाएं लड़कियाँ

शकुन्तला बेनीवाल (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय)

महर्षि दयानन्द न होते तो आज महिलाएं मंच पर नहीं होती।

बहन दयावती आर्या(बौद्धिक - विदूषी)

लड़कियों कोसिर्फ शिक्षितकर दो अधिकार तोवो अपनेआप ले लेंगी।

प्रो.वीणाफौगाट (महारानी किशोरी कालेज, रोहतक)

36. अपने बेटियों को बेटों के बराबर प्यार व सम्मान जिस दिन समाज देना प्रारम्भ करदेगा। उसीदिन से कायाकल्प हो जायेगा।

श्री सुनीता आर्या (बेटी बचाओ अभियान)

सामाजिक बुराईयों के विरू) आर्यसमाज का संघर्ष जारी रहेगा।

डा. पवन पत्रकार,राष्ट्रीय प्रवक्ता, सा.आ.यु.प.

सरकारें यदि सामाजिक आन्दोलनों में सकारात्मक सहयोग दें तो परिणाम देश हित में व सार्थक निकल सकते हैं।

महेन्द्र शास्त्री (गुड़गांव)

अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 6 का शेष

आर्यसमाज के महान नेता, युवाओं के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी ....

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ 24 फरवरी 2013 को प्रातः 9 बजे हुआ। महायज्ञ का विधिवत उद्घाटन सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक और बेटी बचाओ अभियान के सूत्रधार युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने किया। यज्ञ के ब्रह्मा वेदों, उपनिषदों, दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य, गाजियाबाद संन्यास आश्रम के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश जी ने इस महायज्ञ के मुख्य यज्ञमान डा. रणबीर खासा (रोहतक) तथा श्री राजबीर वशिष्ठ (टिटौली) को संकल्प दिलवाया। गुरूकुल यमुनानगर (हरियाणा) के सुयोग्य स्नातकों - आचार्य अमरीश, रमाकान्त शास्त्री, अमीत शास्त्री, सुरेश शास्त्री ने सुमधुर वेदपाठ के माध्यम से महायज्ञ प्रारम्भ किया।

महायज्ञ 24 फरवरी से प्रारम्भ होकर प्रतिदिन प्रातः 8.30 से12 बजे तथा सायं 3 से 6 बजे तक वशिष्ठ जी रहे। फिर भी समय समय पर समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व महायज्ञ के कार्यक्रम में उपस्थित रहे तथा यज्ञमान की भूमिका निभा कर संकल्प भी लिया। इन महानुभावों में दक्षिण अफ्रीका से श्री राजेश लक्ष्मण जी, जर्मनी से श्री रामप्रहलाद शर्मा जी, बम्बई से डा. सोमदेव आचार्य, मध्यप्रदेश से डा. लक्ष्मणदास आर्य, राजस्थान से श्री बिरजानन्द एडवोकेट, दिल्ली से वैद्य इन्द्रदेव, श्रीमति रश्मि देवी, श्री मधुर प्रकाश डा. सुरेन्द्र सिंह कादियाण, आचार्य रामपाल शास्त्री, उत्तर प्रदेश से ब्र. रामपफल,मनोचा खण्डेलवाल, ब्र. सहसरपाल आर्य, ब्र. श्रीपाल आर्य, ब्र. रामकिशन आर्य, छत्तीसगढ़ से सुरेश शास्त्री, नोएडा से श्री विरेन्द्र हुड्डा व श्रीमति सावित्रीदेवी आदि मुख्य रहे। इनके अतिरिक्त हरियाणा भर से समय-समय पर यज्ञमान बनने वाले महानुभावों में आचार्य सत्यप्रकाश आर्य (हिसार), प्रि महेन्द्र शास्त्री, महावीर शास्त्री (बलियाणा), पहलवान, रईया, राजबीर सिंह, दलबीर बैन्दा, सुनील, राजकपूर बामल, सुशील लीखा, अमर सिंह यादव, रेवाड़ी, बलवीर सैनी (टिटौली), बिमला देवी, सोमबीर कादियान, सोमवीर आचार्य खरकड़ा, सूबेदार रिछपाल, श्रीमति सरोज राणा रोहतक, विजेन्द्र सिंह आसौदा, मा. सतबीर जुलानी, वैद्य दयाकिशन अहीरका, दयानन्द अहीरका, कृष्ण आर्य, राकेश आर्य, जगदेव आर्य टिटौली, राजकुमार सिवाना, साधुराम बोहर, सतपाल आर्य खरैन्टी, मा. नफेसिंह रिठाल, धर्मवीर आर्य, गुमाना, सुखबीर शास्त्री, डा. प्रकाशवीर विद्यालंकार, चौ. धर्मचन्द, चौ. सूबेसिंह पूर्व (एस.डी.एम.), कंवर सिंह, कृष्ण शास्त्री, रमेश हुड्डा, सतपाल आर्य जूई, डा. स्वतन्त्रानन्द शास्त्री, सुदामा आर्य खरकड़ा, मिथलेश हुड्डा आसन तथा जितेन्द्र मलिक, नरेन्द्र पलवल, धर्मेन्द्र एवं अमित आदि प्रमुख थे।

विशेष धन्यवाद

स्वामी आर्यवेश जी द्वारा मंच से जो विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया गया उनमें सर्वप्रथम महायज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश जी का धन्यवाद मुख्य हैं। स्वामी जी ने लगातार 15 दिन का समय देकर महायज्ञ को पूरे विधि विधान से सम्पन्न करवाया। गुरूकुल यमुनानगर के सुयोग्य स्नातक श्री अमरीष शास्त्री, रमाकान्त शास्त्री, सुरेश शास्त्री, अमित शास्त्री जी का भी विशेष धन्यवाद जिन्होंने सुमधुर वेदपाठ तो किया ही साथ ही साथ यज्ञ व्यवस्था में भी सहयोग करवाया। मुख्य यज्ञमान डा. रणबीर खासा तथा राजबीर वशिष्ठ का भी धन्यवाद क्योंकि बिना यज्ञमान के यज्ञ सफल नहीं होता। इनके अतिरिक्त समय-समय पर यज्ञमान बनकर संकल्प लेने वाले सहयोगी जिनकी पूरी सूची ऊपर दी गई है, का भी धन्यवाद किया गया।

बेटी बचाओ महायज्ञ हेतु 4 क्विंटल देशी घी का सहयोग करने वाले श्रद्धेय महन्त सेवापुरी (बेरी) झज्जर का विशेष धन्यवाद। महन्त जी पिछले कई वर्षों से इस महायज्ञ में सहयोग देते रहते हैं।

महायज्ञ के लिए लगभग 20 क्विंटल पीपल की समिधाएं दान में देने वाले श्री विनोद हुड्डा जी (रोहतक) का भी विशेष धन्यवाद।

महायज्ञ हेतु सामग्री की व्यवस्था करने में सहयोग के लिए आर्य नेता श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का भी विशेष धन्यवाद।

महायज्ञ में समय-समय पर उद्बोधन देने पहुंचे विशेष महानुभावों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों, विद्वानों, उपदेशकों, प्रान्तीय कार्यकर्ताओं, स्थानीय कार्यकर्ताओं, ग्राम टिटौली के सभी आर्यजनों एवं उन बुजुर्ग माताओं तथा बच्चों का भी विशेष धन्यवाद जो निरन्तर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग देते रहे।

मीडिया की व्यवस्था के लिए मा. प्रदीप कुमार, विनय कुमार, बबरूभान अहलावत, अजयपाल आर्य का भी विशेष धन्यवाद। टैन्ट की सुन्दर व्यवस्था के लिए मा. मरूथी जी का तथा साउण्ड की शानदान व्यवस्था के लिए श्री सुरेश अनेजा जी का और भोजन की अति उत्तम व्यवस्था के लिए श्री मानसिंह का भी विशेष धन्यवाद। आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं तथा बेटी बचाओ अभियान के तमाम कार्यकर्ताओं का भी विशेष आभार क्योंकि उन्हीं के पुरूषार्थ से यह 15 दिन तक चला कार्यक्रम सफलता की बुलंदियों को छू सका। ●